



ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर-263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बर: 05944-233032



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्ष: 28 अंक: 35 बुलेटिन अवधि: : 1 – 5 मई, 2019 दिन: मंगलवार दिनांक: 30 अप्रैल, 2019

मौसम पूर्वानुमान:

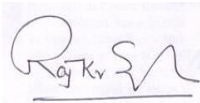
भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली द्वारा पूर्वानुमानित तथा मौसम केन्द्र, देहरादून द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा नैनीताल जिले के पर्वतीय व मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :-

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	01/05/2019	02/05/2019	03/05/2019	04/05/2019	05/05/2019
वर्षा (मिमी0)	0	1	10	5	2
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	28	27	26	25	26
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	18	16	15	14	15
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	मध्यम बादल	मध्यम बादल	मध्यम बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	75	80	85	85	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	35	40	45	45	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	008	008	010	010
वायु की दिशा	उत्तर-पूर्व	पूर्व-दक्षिण-पूर्व	पूर्व	पूर्व-दक्षिण-पूर्व	पूर्व-दक्षिण-पूर्व

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई-2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (23 – 29 अप्रैल, 2019) में आसमान साफ रहने के साथ मध्यम से घने बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 20.2 से 26.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 9.2 से 13.8 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल	अवस्था	कृषि मौसम सलाह समिति द्वारा किसानों हेतु कृषि सलाह
गेहूँ एवं दलहनी फसलें	कटाई	गेहूँ एवं दलहनी फसलों की कटाई एवं मड़ाई का कार्य करें। गेहूँ की मड़ाई के बाद धान की बुवाई के लिए गहरी जुताई एवं मेड़बन्दी करें।
लोबिया व फ़ासबीन	—	लोबिया व फ़ासबीन में जड़ एवं तना गलन रोग की रोकथाम हेतु कार्बन्डाजिम 500 ग्राम/है० की दर से प्रयोग करें।
शरद एवं बसंतकालीन गन्ना	—	मैदानी क्षेत्रों में, शरद एवं बसंतकालीन गन्ने की सिंचाई, खरपतवार एवं पोषक तत्वों का प्रबन्धन ठीक प्रकार से करें। मैदानी क्षेत्रों में, बसंतकालीन गन्ने में खरपतवार के नियंत्रण हेतु बुवाई के तीन दिन के अंदर या 15-20 दिन पर 2-3 पत्ति अवस्था में वैलपार के-4 की 2 कि०ग्रा० मात्रा को 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। गन्ने में निराई-गुड़ाई के उपरांत सिंचाई के बाद नत्रजन का प्रयोग करें। बसंतकालीन गन्ने में कल्ले निकलने की अवस्था में गुड़ाई करने के एक हफ्ते बाद सिंचाई करें एवं मैट्रीब्यूजीन/एट्राजीन की 2 कि०ग्रा० मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
प्याज	—	प्याज में पत्ती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु टेबुकोनाजोल या डिफिनोकोनाजोल या प्रोपीकोनाजोल का 500 मिली० प्रति है० की दर से किसी सर्वांगी कीटनाशी एवं स्टीकर के साथ मिलाकर छिड़काव करें।
शिमलामिर्च, बैंगन, टमाटर, मिर्च	रोपाई	मध्यम व उंचे पर्वतीय क्षेत्रों में पॉलीहाउस में शिमलामिर्च, बैंगन की पौधों का रोपण करें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। टमाटर व मिर्च में पत्तियों पर धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2.5 ग्राम/ली पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
उद्यान प्रबन्ध	—	मध्यम एवं निचले पर्वतीय क्षेत्रों में आड़ू के पर्णकुंचन रोग की रोक-थाम के लिए कीटनाशक रसायनों का द्वितीय छिड़काव करें। नर्सरी में ग्राफिटिंग किये गये पौधों में मूल वृंत से निकलने वाली शाखाओं को तोड़कर अलग करें। फल अच्छादन होने के उपरान्त मैंगो हौपर के प्रकोप होने की स्थिति में इमिडाक्लोरपिड का 3 मि०ली०/10लीटर के हिसाब से आम में छिड़काव करें।
पशुपालन	—	गर्मी के मौसम में पशुशाला के आसपास की नालियों में मेलाथियॉन अथवा अन्य कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव समय समय पर कराते रहे। इस गर्मी के दिनों में पशुओं के लिए पानी की उचित व्यवस्था करें। पीने के पात्र को साफ रखना चाहिए और दिन के समय पशुओं को कम से कम चार बार पानी जरूर पिलाये।



डा० आर० के० सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर